Pradeep

05 Mar 1987

07:15 AM

Jeypore

Model: Sadesati-Report **Order No: 112920**

तिथि 05/03/1987 **समय** 07:15:00 **वार** गुरुवार **स्थान** Jeypore **चित्रपक्षीय अयनांश** : 23:40:37
अक्षांश 18:51:38 उत्तर **रेखांश** 82:33:03 पूर्व **मध्य रेखांश** 82:30:00 पूर्व **स्थानिक संस्कार** 00:00:12 घंटे

पंचांग		अवकहड़ा चक्र	
साम्पातिक काल	18:04:20 घं	गण	मनुष्य
वेलान्तर	00:11:41 घं	योनि	गज
सूर्योदय	06:16:51 घं	नाड़ी	मध्य
सूर्यास्त	18:06:18 घं	वर्ण	क्षत्रिय
चैत्रादि संवत	2043	वश्य	चतुष्पाद
शक संवत	1908	वर्ग	मृग
मास	फाल्गुन	युँजा	पूर्व
पक्ष	शुक्ल	हंसक	अग्नि
तिथि	6	जन्म नामाक्षर	ले-लेखपाल
नक्षत्र	भरणी	पाया(रा.-न.)	रजत-स्वर्ण
योग	ऐन्द्र	होरा	गुरु
करण	कौलव	चौघड़िया	शुभ

विंशोत्तरी
शुक्र 5वर्ष 4मा 13दि

राहु	
18/07/2015	
17/07/2033	
राहु	30/03/2018
गुरु	23/08/2020
शनि	30/06/2023
बुध	16/01/2026
केतु	03/02/2027
शुक्र	03/02/2030
सूर्य	29/12/2030
चन्द्र	29/06/2032
मंगल	17/07/2033

योगिनी
भद्रिका 1वर्ष 4मा 3दि

भ्रामरी	
08/07/2015	
08/07/2019	
भ्रामरी	17/12/2015
भद्रिका	07/07/2016
उल्का	08/03/2017
सिद्धा	17/12/2017
संकटा	06/11/2018
मंगला	17/12/2018
पिंगला	08/03/2019
धान्या	08/07/2019

ग्रह	व	अ	अंश	राशि	नक्षत्र	पद	स्वामी	अं.	स्थिति	षट्बल	चर	स्थिर	ग्रह तारा
लग्न			07:42:26	मीन	उ०भाद्रपद	2	शनि	केतु	---	0:00			
सूर्य			20:16:24	कुंभ	पू०भाद्रपद	1	गुरु	गुरु	शत्रु राशि	1.19	भ्रातृ	पितृ	साधक
चंद्र			23:05:13	मेष	भरणी	3	शुक्र	शनि	सम राशि	1.17	अमात्य	मातृ	जन्म
मंगल			14:53:27	मेष	भरणी	1	शुक्र	शुक्र	स्वराशि	1.38	मातृ	भ्रातृ	जन्म
बुध	व	अ	09:35:27	कुंभ	शतभिषा	1	राहु	गुरु	सम राशि	1.20	पुत्र	ज्ञाति	प्रत्यारि
गुरु			06:52:00	मीन	उ०भाद्रपद	2	शनि	बुध	स्वराशि	1.42	कलत्र	धन	वध
शुक्र			08:21:49	मक	उत्तराषाढ़ा	4	सूर्य	शुक्र	मित्र राशि	1.02	ज्ञाति	कलत्र	सम्पत
शनि			26:55:11	वृश्चि	ज्येष्ठा	4	बुध	गुरु	शत्रु राशि	0.99	आत्मा	आयु	मित्र
राहु			18:06:07	मीन	रेवती	1	बुध	बुध	सम राशि		---	ज्ञान	मित्र
केतु			18:06:07	कन्या	हस्त	3	चंद्र	बुध	शत्रु राशि		---	मोक्ष	विपत

लग्न-चलित

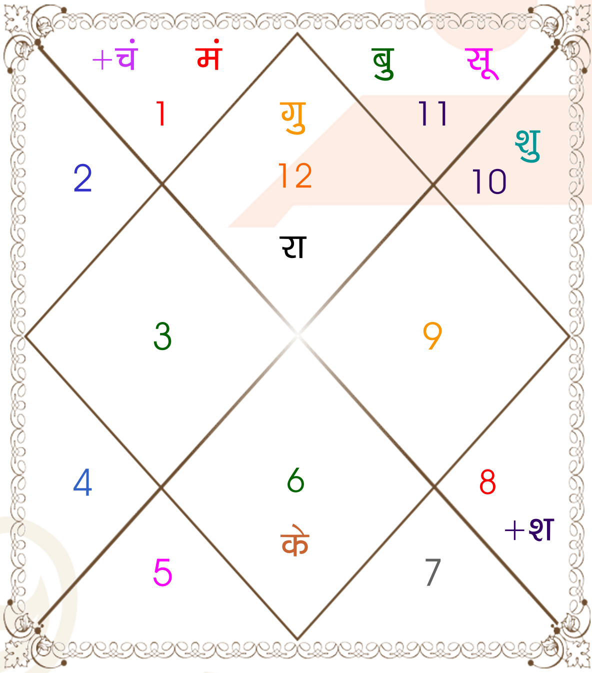
+चं
मं
बु
सू
1
गु
11
2
12
शु
10
रा
3
9
4
6
8
के
+श
5
7

चन्द्र कुंडली

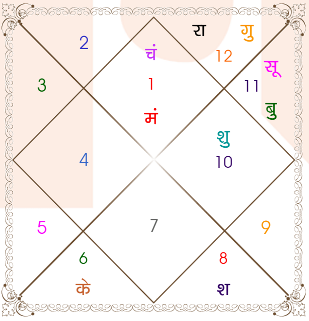
2
रा
गु
चं
12
सू
3
1
11
मं
बु
शु
4
10
5
7
9
6
8
के
श

नवमांश कुंडली

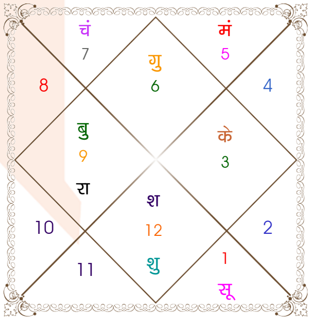
चं
मं
7
गु
5
8
6
4
बु
के
9
3
रा
श
10
12
2
11
शु
1
सू

सर्वाष्टकवर्ग

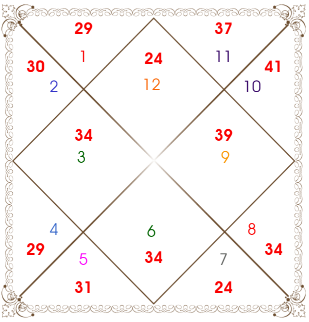
29
37
1
24
11
30
41
2
12
10
34
39
3
9
4
6
8
29
34
5
7
34
31
24

दशमांश कुंडली

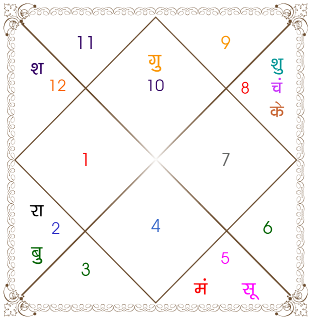
11
9
गु
शु
श
12
10
8
चं
के
1
7
रा
2
4
6
बु
3
5
मं
सू

साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है । लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है । साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है ।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है । प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है । प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पङता है । द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पङता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है ।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है ।

प्रथम चक्रः

अष्टम स्थानस्थ ढैया	05/03/1987-17/12/1987	-------------------------	-------------------------
साढेसाती प्रथम ढैया	02/06/1995-10/08/1995	16/02/1996-17/04/1998	-------------------------
साढेसाती द्वितीय ढैया	17/04/1998-07/06/2000	-------------------------	-------------------------
साढेसाती तृतीय ढैया	07/06/2000-23/07/2002	08/01/2003-07/04/2003	-------------------------
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	06/09/2004-13/01/2005	26/05/2005-01/11/2006	10/01/2007-16/07/2007

द्वितीय चक्रः

अष्टम स्थानस्थ ढैया	02/11/2014-26/01/2017	21/06/2017-26/10/2017	-------------------------
साढेसाती प्रथम ढैया	29/03/2025-03/06/2027	03/06/2027-23/02/2028	-------------------------
साढेसाती द्वितीय ढैया	03/06/2027-03/06/2027	23/02/2028-08/08/2029	05/10/2029-17/04/2030
साढेसाती तृतीय ढैया	08/08/2029-05/10/2029	17/04/2030-31/05/2032	-------------------------
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	13/07/2034-27/08/2036	-------------------------	-------------------------

तृतीय चक्रः

अष्टम स्थानस्थ ढैया	11/12/2043-23/06/2044	30/08/2044-08/12/2046	-------------------------
साढेसाती प्रथम ढैया	14/05/2054-02/09/2054	05/02/2055-07/04/2057	-------------------------
साढेसाती द्वितीय ढैया	07/04/2057-27/05/2059	-------------------------	-------------------------
साढेसाती तृतीय ढैया	27/05/2059-11/07/2061	13/02/2062-07/03/2062	-------------------------
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	24/08/2063-06/02/2064	09/05/2064-13/10/2065	03/02/2066-03/07/2066

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार	फल	क्षेत्र
अष्टम स्थानस्थ ढैया	सम	बदनामी
साढेसाती प्रथम ढैया	सम	स्वास्थ्य
साढेसाती द्वितीय ढैया	अशुभ	धन
साढेसाती तृतीय ढैया	शुभ	पराक्रम
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	सम	सन्तति कष्ट

साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

ऊँ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः।।

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

ऊँ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात।।

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

ऊँ हों जूं सः ऊँ भूर्भुव स्वः ऊँ।।

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें । लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डन्ट बनाकर धारण करें ।

ऊँ शं शनैश्चराय नमः।

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है ।